स्वाधीनता आन्दोलन में आदिवासियों की भूमिका और हिन्दी उपन्यास

मनोज कुमार

जब हम स्वाधीनता आन्दोलन की बात करते हैं तो निश्चित रूप से अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ी गयी लड़ाईयों की सीमा तक ही सीमित रहते हैं और 1857 की क्रांति को प्रथम बिन्दू मानकर चर्चा करते हैं, जो आज यह प्रश्नवाचक चिन्ह के घेरे में आ चुका है और जो 1857 के पहले के स्वतंत्रता संग्राम के सन्दर्भ में लड़े गये युद्धों के उजागर होने से ऐसा हुआ है। 1857 के सिपाही विद्रोह के पहले भी अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ विद्रोह हुए थे जो राजा–महाराजाओं ने नहीं बल्कि जनता की एक अनुसूचित जमात ने किया था जिन्हें हम आदिवासी कहते है। ये जो विद्रोह हुए थे कोई सत्ता पाने के लिए नहीं हुए थे बल्कि अपनी स्वायत्तशासन की व्यवस्था को कायम रखने के लिए किए गये थे।